श्रुतदीप रिसर्च फाउंडेशन का संवाद-सेतु

श्रुतदीप

॥ सुयं मे आउसं ॥

वि.सं. २०७४ • वर्ष - २ • अंक - २ अक्तूबर २०१८

प्राचीन भारतीय लिपियों का परिचय

डॉ. अनिर्वाण दाश (सहायक प्राध्यापक पाली विभाग, पुणे विद्यापीठ, पुणे)

जो लिखा जाता है उसे लिपि और जो बोली जाती है उसे भाषा कहते है। भाषा को स्थायी रूप देने के लिए लिपि का उपयोग होता रहा है। ब्राह्मी लिपि भारत के उपरांत जपान, सुमात्रा, बाली(इंडोनेशिया) तथा मध्य आशियाई देशों के लिपियों की जननी है। लिपि का उद्भव एवं विकास तीन स्तर पर हुआ है ऐसा कहा जाता है -

१. चित्रलिपि २. भावलिपि ३. ध्वनिलिपि।

१. चित्रलिपि - यह लिपि का प्राचीन रूप था। चित्र के माध्यम से विचारों की अभिव्यक्ति की प्रक्रिया को चित्रात्मक लिपि कहते हैं। जिस वस्तु का वर्णन करना होता था उसका चित्र बनाते थे। चित्रलिपि का प्रयोग प्रायः सभी देशो में पाया जाता है। मिस्र, मेसोपोटामिया, स्पेन, उत्तरी अमेरिका, चीन तथा भारत में इसके प्राचीन अवशेष उपलब्ध हैं। चित्रलिपि का संबंध भाषा के श्रवण रूप से बिल्कुल नहीं था। इस कारण वास्तविक अर्थ में इसे लिपि कहना भी युक्तिसंगत प्रतीत नहीं होता है। वर्तमान समय में भी चीन में चित्रलिपि का प्रयोग होता है। कुछ प्राचीन देशों में रस्सी में गाँठे बांधकर संदेश भेजे जाते थे। पेरु देश के निवासी इसका प्रयोग करते थे। लाल डोरी का अर्थ सैनिक, पीली डोरी का अर्थ सुवर्ण, सफेद डोरी का अर्थ चाँदी और हरी डोरी का अर्थ अनाज होता था। यह सूत्रात्मक लिपि भी चित्रलिपि के अंतर्गत ही आती है।

सिंधु घाटी सभ्यता में प्राप्त पशुपति का चित्र

२. भावलिपि - यह लिपि के विकास का दूसरा चरण है। चित्रलिपि में ही जब भाव अभिव्यक्त करने की प्रगति हुई तो वह भावलिपि के रूप में विकसित हुई। जैसे एक वृत्त (गोल) आकृति है उसका अर्थ सूर्य, ताप, प्रकाश, तारा आदि हो सकते हैं। दुःख के बोधक के रूप में आँख से गिरते आंसू के बूंद के प्रयोग भी हुए। इस भावमूलक लिपि के उदाहरण चीन, उत्तरी अमेरिका, पश्चिम आफ्रिका आदि देशो में प्रचूर मात्रा में मिलते हैं।

दुःख का बोधक

३. ध्वनिलिपि - यह लिपि विकास का तृतीय चरण है। यह मनुष्य की लिपि के संबंध में सर्वोत्कृष्ट उपलब्धि मानी जाती है। इसमें प्रत्येक ध्वनि के लिए संकेत निर्धारित किये गए।

ब्राह्मी लिपि

देश-काल आदि के भेद से इन ध्वनिलिपियों का विकास हुआ। ब्राह्मी और खरोष्ठी ये दोनों ध्वनिलिपियां हैं। इन दोनों लिपियों का लेखन के प्रकार से भेद दिखता है। ब्राह्मी लिपि बाएं से दाएं और खरोष्ठी लिपि दाएं से बाएं लिखी जाती थी। खरोष्ठी लिपि ईसा की पांचवी-छठी सदी के बाद प्रयुक्त नहीं हुई।

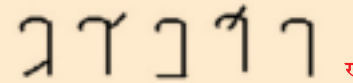

खरोष्ठी लिपि

पाश्चात्य एवं भारतीय विद्वानों ने प्राचीन लिपियों के रहस्योद्घाटन का कार्य अठारहवी सदी में प्रारंभ किया। प्राचीन लिपियों की प्रामाणिकता को सिद्ध करने में सर्वप्रथम **ग्रोट फेण्ड** ने अपना योगदान दिया। उन्होंने ई.स. १८०२ में मेसोपोटामिया की कीलाक्षर लिपि (चित्रलिपि) की पहचान की। भारत की ब्राह्मी लिपि की पहचान **जेम्स प्रिंसेप** ने ई.स.१८३७ में किया। चिनी विश्वकोश फा-वन-सु-लिव (ई.स.६८८) के अनुसार लेखन का आविष्कार तीन दैवी शक्तियों ने किया था। पहली दैवी शक्ति थी फन् (ब्रह्मा) जिन्होंने ब्राह्मी लिपि का आविष्कार किया, दुसरी दैवी शक्ति थी किया-लु (खरोष्ठ) जिन्होंने खरोष्ठी लिपि का आविष्कार किया, तीसरी और सब से कम महत्त्वपूर्ण दैवी शक्ति थी त्साम-की जिसके द्वारा आविष्कृत लिपि ऊपर से नीचे ऐसे लिखी जाती थी। इसी विश्वकोश में आगे यह बताते है कि पहले दो देवता भारत में और तीसरे चीन में उत्पन्न हुए थे।

ब्राह्मी लिपि से दक्षिणी एवं उत्तरी धाराओं में लिपियों का विकास हुआ है। जिसमें उत्तरी धारा में शारदा, डोगरी, गुरुमुखी आदि लिपियों का समावेश है। दक्षिणी धारा में ग्रंथ, तमिल, मलयालम्, प्राचीन कन्नड आदि लिपियों का समावेश है।

ब्राह्मी लिपि का आधुनिक लिपियों तक का विकास

डॉ. महावीर शास्त्री (प्राकृत विभागप्रमुख वालचंद कॉलेज, सोलापुर)

प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं इतिहास का अभ्यास लिपि एवं भाषा के ज्ञान से होता है। हमारी प्राचीन परंपरा में सुनकर याद रखा जाता था। उसे ही श्रुतपरंपरा कही जाती है। जब याद रखना कठिन हो गया तब लेखनकला का विकास हुआ। जैन परंपरा के अनुसार भगवान ऋषभदेव ने ब्राह्मी कन्या को दाहिनी गोद में बिठाकर लिपि सीखायी और अपनी दुसरी कन्या सुंदरी को बांयी गोद में बिठाकर अंकगणित सीखाया। इसलिए लिपि बाएं से दाएं एवं अंक दाएं से बाएं (अङ्कानां वामतो गतिः) लिखे जाते हैं। ब्राह्मी कन्या के नाम से **ब्राह्मी लिपि** का नामकरण हुआ है।

ब्राह्मी एवं सुंदरी को लिपि एवं अंकगणित सीखाते हुए भ. ऋषभदेव

भारतीय प्राचीन लिपियों में निम्नलिखित लिपियों का उल्लेख प्राप्त होता है।

१. सिंधु लिपि - ये लिपि चित्रलिपि से निर्मित हुई है। सिंध प्रांत में मोहन-जो-दरो के उत्खनन में चित्रलिपि में उत्कीर्ण कुछ मुद्राएं मिली है। चित्रलिपि से ही लिपियों का विकास हुआ है।

२. ब्राह्मी लिपि - इस लिपि को सभी भारतीय लिपियों की जननी कहा जाता है। सम्राट खारवेल ने आज से करीबन दो हजार वर्ष पहले उडीसा प्रांत में उदयगिरि-खंडगिरि के हाथीगुफा शिलालेख पर ब्राह्मी लिपि में ही नवकार महामंत्र के दो पद उत्कीर्ण करवाए था।

३. खरोष्ठी लिपि - ई.स. पूर्व चौथी सदी से इस लिपि का प्रचलन हुआ। इसे इंडोबॅक्ट्रियन, बॅक्ट्रोपाली, काबुलियन आदि नामों से भी जाना जाता है।

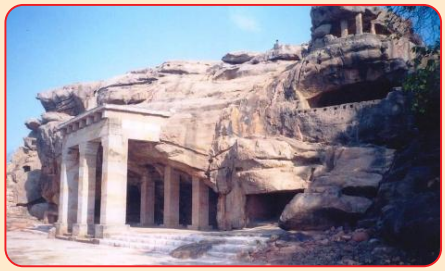

हाथीगुफा (खंडगिरि- भुवनेश्वर)

४. गुप्त लिपि - गुप्त वंश के राजा अपने संदेश भेजने के लिए इस लिपि का उपयोग करते थे।

५. कुटिल लिपि - गुप्तलिपि का ही विकसित रूप कुटील लिपि है। ई.स.छठी सदी से नौवीं सदी तक इस लिपि का प्रचलन रहा।

६. शारदा लिपि - इस लिपि का समय ई.स. १० सदी है। शारदा लिपि का प्रयोग ज्यादातर कश्मीर में किया जाता था। इस लिपि से ही लंडा, डोगरी, चमेआली, गुरुमुखी आदि लिपियों का विकास हुआ है।

७. नागरी लिपि - कुटिल लिपि से नागरी लिपि की उत्पत्ति हुई है।

सम्राट अशोक के शिलालेख ब्राह्मी तथा खरोष्ठी लिपि में लिखे हुए मिलते हैं। ब्राह्मी लिपि के विकास में सर्वप्रथम रेखाएं बनायी, उन रेखाओं को विशिष्ट आकार दिया उस पर से वर्णमाला बनी है। ब्राह्मी लिपि का उत्तरी धारा में शारदा, नागरी एवं कुटील लिपियों में विकास हुआ। शारदा लिपि से टक्की, डोग्रा, चंडी आदि लिपियों का विकास हुआ। ब्राह्मी लिपि का परवर्ति लिपियों में सब से ज्यादा परिवर्तन नागरी लिपि का हुआ है।

ब्राह्मी लिपि प्रशिक्षण कार्यशाला

(श्रुतभवन तथा पुणे विद्यापीठ के संयुक्त तत्त्वावधान में २९ से ३१ अगस्त २०१८ तक आयोजित त्रिदिवसीय ब्राह्मी लिपि प्रशिक्षण कार्यशाला का वृत्तांत)

डेक्कन कॉलेज पदव्युत्तर संशोधन संस्था अभिमत विद्यापीठ के अमेरिकन इंस्टिट्यूट ऑफ इंडियन स्टडीज(AIIS) में अमेरिका से कुछ विद्यार्थी पुणे में हर साल तीन महिने के लिए प्राकृत एवं जैन तत्त्वज्ञान सीखने के लिए आते हैं। सेठ हिराचंद नेमचंद जैन अध्यासन सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठ की प्रमुखा प्रा. डॉ. **विमलजी बाफना** अमेरिकन इंस्टिट्यूट में उन संशोधक छात्रों को प्राकृत पढाते हैं। वे हर साल उन संशोधक छात्रों को लेकर **श्रुतभवन** में वर्तमान कार्य से अवगत कराने आते हैं। इस साल भी दिनांक ६ अगस्त २०१८ के दिन अमेरिकन इंस्टिट्यूट के विद्यार्थी एवं अध्यापिका श्रुतभवन की मुलाकात हेतु आए। श्रुतभवन में वर्तमान शास्त्र संशोधन प्रकल्प की क्रमबद्ध प्रक्रिया, प्राचीन हस्त लिखित प्रतों का सूचिनिर्माण का कार्य एवं अभ्यास वर्ग प्रकल्प के विषय में विशेष रूप से माहिती लेकर अत्यंत प्रभावित हुए। पूज्य गुरुदेव से अग्रिम अध्ययन एवं जैन तत्त्वज्ञान के विषय में बातचीत की। श्रुतभवन में यदि प्राचीन लिपियों का एवं भाषाओं के अध्ययन का अवसर मिले तो हम बहुत आनंदित होंगे, ऐसा उन अमेरिका के विद्यार्थियों ने कहा। विमलजी ने पूज्य गणिवर **वैराग्यरतिविजयजी** म.सा. के समक्ष ब्राह्मी लिपि प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन करने का प्रस्ताव रखा। पूज्य गुरुदेव ने भी सहमति दर्शायी और कार्यशाला के आयोजन हेतु मार्गदर्शन किया। इस कार्यशाला में सहभाग लेने के लिए लगभग १२० लोगों ने इच्छा दर्शायी। उसमें से ४५ लोगों का चयन किया गया।

श्रुतभवन की मुलाकात करते हुए अमेरिकन विद्यार्थी- एरिक विडालोबो, ए. शशी एवं डॉ.विमलजी बाफना

कार्यशाला का उद्घाटन पुणे विद्यापीठ के **कुलगुरु डॉ.नितीन करमळकरजी** ने किया। इस प्रसंग पर विद्यापीठ के **कुलसचिव डॉ. अरविंद शाळीग्राम** भी उपस्थित रहे। तत्त्वज्ञान विभाग के प्रमुख, संस्कृत प्रगत अध्ययन केंद्र, एवं महर्षि सान्दिपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन के उपाध्यक्ष **प्रा.डॉ.रवींद्र मुळे**, संस्कृत एवं प्राकृत भाषा विभाग की प्रमुख डॉ. **राजश्री मोहाडीकर**, तत्त्वज्ञान विभाग के **प्रा. टंडन, राजेंद्रभाई बांठिया** एवं **ललित गुंदेचा** आदि मान्यवर भी उपस्थित थे।

इस कार्यशाला में डॉक्टर, इंजिनियर, पुरातत्त्व विभाग, इतिहास आदि से संबंधित विभिन्न क्षेत्रों से सहभागी उपस्थित थे। तीन दिन की कार्यशाला में ब्राह्मी लिपि की वर्णमाला की शिक्षा, विभिन्न पद्धति से अभ्यास एवं ब्राह्मी

ब्राह्मी लिपि प्रशिक्षण कार्यशाला में मनोगत व्यक्त करते हुए कुलगुरु डॉ. नितीन करमळकरजी

लिपि में लिखित सम्राट अशोक के शिलालेख का वाचन कराया। इस कार्यशाला में डॉ.अनिर्वाण दाशजी का **प्राचीन भारतीय लिपियों का परिचय** एवं डॉ. महावीर शास्त्रीजी का **ब्राह्मी लिपि का आधुनिक लिपियों तक का विकास** इन विषयों पर व्याख्यानों का भी आयोजन किया था। इस कार्यशाला के अंतिम दिन परीक्षा भी ली गयी। कार्यशाला का समापन एवं प्रमाणपत्र वितरण पुणे विद्यापीठ के प्र-कुलगुरु **डॉ. एन. एस. उमराणीजी** ने किया।

समापन समारोह में श्रुतभवन के प्रतिनिधि के रूप में **वर्धमानजी जैन** उपस्थित थे। श्रुतभवन संशोधन केंद्र में कार्यरत श्री **अमितकुमार उपाध्ये**, श्री **कृष्णा भगवान माळी** तथा उनके सहकारियों ने ब्राह्मी लिपि सीखायी।

पुरे विश्व में अपने संस्कृति के वैभव के कारण भारत का स्थान हमेशा ऊंचा रहा है। इस सांस्कृतिक वैभव को आगामी पीढी तक सक्षमता से और सटीकता से पहुंचाने का भगीरथ कार्य जैन अध्यासन तथा **श्रुतभवन** आदि संस्थाएं कर रहे है। वह निश्चितरूप से प्रशंसनीय है। ये कार्यशाला सांस्कृतिक स्तर को समृद्ध करनेवाली है।

- डॉ. एन. एस. उमराणी (प्र-कुलगुरु, पुणे विद्यापीठ)

ब्राह्मी लिपि प्रशिक्षण कार्यशाला में उपस्थित प्रशिक्षणार्थी

भारतीय संस्कृति के सर्वांगीण अभ्यास के लिए प्राचीन लिपियों का ज्ञान आवश्यक है। वह प्राप्त कराने का अवसर **श्रुतभवन** एवं **जैन अध्यासन** के संयुक्त तत्त्वावधान में मिला है। प्राचीन लिपि सीखने के लिए इतना प्रतिसाद निश्चितरूप से गौरवास्पद है। भविष्य में भी ऐसी प्राचीन लिपि एवं प्राचीन भाषा सीखने के लिए कार्याशालाओं का आयोजन होता रहे। **- डॉ.नितीन करमळकर** (कुलगुरु, पुणे विद्यापीठ)

इस कार्यशाला में विभिन्न क्षेत्र में कार्य करनेवाले व्यक्तिओं का सहभाग दिख रहा है। इसके आयोजन से जिज्ञासूओं को नयी दिशा मिली है। **श्रुतभवन** का उपक्रम निश्चितरूप से स्तुत्य है। प्राचीन लिपियां, संस्कृत-प्राकृत आदि भाषाएं, हस्तप्रतविद्या इत्यादि विषयों का गहनता से अध्ययन वहां पर चल रहा है जो प्राचीन ज्ञानसंपदा को उजागर करने में अतीव महत्त्वपूर्ण है। **भारतवर्ष की संस्कृति को उजागर करने में इस संस्था का योगदान सराहनीय है।**

- डॉ.रविंद्र मुळे (तत्त्वज्ञान विभागप्रमुख, पुणे विद्यापीठ)

ब्राह्मी लिपि प्रशिक्षण कार्यशाला में उपस्थित प्रशिक्षणार्थियों के अभिप्राय

आयोजकों की प्रतिबद्धता, सम्राट अशोक के काल में प्रयुक्त लिपि को पहचानने तथा पढने के लिए सुनियोजित एवं सुसंकलित सामग्री एवं प्रख्यात वक्ताओं को आमंत्रित करके हमें लाभान्वित किया।

- डॉ. आशा विजय राव
(प्राध्यापिका - डी.वाय. पाटील कॉलेज)

हम सभी को सम्राट अशोक के समय में ले जाया गया। ब्राह्मी लिपि सीखने से एक प्रकार की आत्मिक शांति प्राप्त हुई।

- श्रीनिवास सैबी (बी.ए. इतिहास)

नयी लिपि सीखने का आनंद मिला। श्रुतभवन संस्था ने एक ग्रुप बनाकर हर सप्ताह ब्राह्मी लिपि में लिखित परिच्छेद अभ्यास के लिए दिया तो लिपि का ज्ञान जीवित रहेगा।

- अमोल गायकवाड (पीएच.डी. इतिहास)

कार्यशाला का आयोजन बहुत ही अच्छा था। ब्राह्मी लिपि का डिप्लोमा अथवा सर्टिफिकेट कोर्स का आयोजन करें। जिससे इस लिपि के विषय में जागृति एवं ज्ञान बढेगा। **- सुभाष मुसळे** (आर्किटेक्ट)

It was a wonderful experience to learn Brahmi script. The guest lectures, staff and the organization of the program was great. I hope that three or many such programs in the future. Thank you.

- Nachiket Daunde (Computer Engineer)

Very well organized. The experts helped us to understand the script in a very easy method. It was a wonderful acdemic experience. I would suggest to conduct such workshops regularly and also make it a Diploma or Certificate course. Nice interaction with all. Sincere thanks to the organizations. **- Ajay Pujari** (PhD)

प दा र्प ण

दि. १४-७-२०१८ परम पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् रत्नचंद्रसूरीश्वरजी म.सा.

दि. १६-९-२०१८ श्री अंकलेश्वर श्वेतांबर मूर्तिपूजक जैन संघ, अंकलेश्वर

श्रुतभवन संशोधन केंद्र कार्य विवरण

शास्त्र संशोधन प्रकल्प के अंतर्गत **लोकप्रकाश, श्रेयांसजिनचरित, अनेकार्थध्वनिमंजरी, अमरकोश सह टीका, चेतोदूत काव्य** एवं **वाक्यप्रकाश सह टीका** का संपादन प्रवर्तमान है।

कारकप्रकरणसंग्रह, अढार पापस्थानक कृतिसंग्रह, शुभाभिलाषा (संस्कृत टीका, हिंदी-गुजराती-अंग्रेजी अनुवाद सह) प्रकाशन के लिए सज्ज है।

वर्धमान जिनरत्नकोश प्रकल्प के अंतर्गत **आ. श्रीमुनिचंद्रसूरिजी म.सा., आ.श्री रत्नाचलसूरिजी म.सा., आ.श्री कुलचंद्रसूरिजी म.सा., नीरजमुनिजी, मुनिश्री धर्मरत्नविजयजी म.सा.** को हस्तलिखित प्रत संबंधी माहिती प्रदान करने का लाभ मिला।

मध्यप्रदेश में चार हस्तलिखित ज्ञानभंडारों का स्केनिंग कार्य वर्तमान है।

प्राचीन श्रुतसंपदा के समुद्धार के लिए समुदार सहयोग देनेवाले महानुभाव

श्री भवानीपुर मूर्तिपूजक जैन श्वेतांबर संघ, कोलकाता

पूज्य सा.श्री **जिनरत्नाश्रीजी** म.सा. की प्रेरणा से श्री अंकलेश्वर श्वेतांबर मूर्तिपूजक जैन संघ, अंकलेश्वर

श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ आराधक ट्रस्ट, पुखराज रायचंद आराधना भवन, साबरमती, अहमदाबाद

पूज्य आ. श्री **मुक्तिप्रभसूरिजी** म.सा. की प्रेरणा से श्रीमती अलकाबेन एवं कांताबेन की दीक्षा महोत्सव समिति, पुणे

पूज्य आ. श्री **नयभद्रसूरिजी** म.सा. की प्रेरणा से तपगच्छ उदय-कल्याण जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक ट्रस्ट, बोरीवली, मुंबई

पूज्य मु. **प्रशमरतिविजयजी** म.सा. की प्रेरणा से श्री सुमतिनाथ स्वामी जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ, रामदास पेठ, नागपुर

पूज्य आ. श्री **देवचंद्रसागरसूरिजी** म.सा. की प्रेरणा से श्री आगमोद्धारक देवर्धि जैन आगम मंदिर ट्रस्ट, पुणे

समाचार

श्रुतभवन में प.पू.आ.श्री. **यशोभद्रसू.** म.सा., प.पू.आ.श्री. **पीयूषभद्रसू.** म.सा., प.पू.आ.श्री. **युगभूषणसू.** म.सा.(पंडित महाराज), प.पू.आ.श्री.**भव्यदर्शनसू.**म.सा., सा. श्री **विपुलदर्शिताश्रीजी** म. (त्रिस्तुतिक), सा. श्री **रुचकदर्शनाश्रीजी** म., सा. श्री **पीयूषर्शनाश्रीजी** म. (आनंदऋषिजी समुदाय), सा. श्री **अर्चितगुणाश्रीजी** म., टिळक आयुर्वेद महाविद्यालय, पुणे के संशोधक-अध्यापकों का पदार्पण हुआ।

अखिल भारतीय वर्धमान स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, पुणे में पू. गणिवर्य **वैराग्यरतिविजयजी** म.सा. का व्याख्यान हुआ।

पू.मु. **गणधररत्नवि.** म.सा. एवं पू.मु. **क्षेमरत्नवि.** म.सा. की पावन निश्रा में कर्जत श्वे.मू.जैन संघ में **मारो प्रिय श्लोक** और **मृत्युनुं मेनेजमेंट** इन पुस्तकों का विमोचन संपन्न हुआ। मुनि **श्रीप्रशमरतिविजयजी** म. का यवतमाल में चातुर्मास है।

पू.सा. **श्रीजिनरत्नाश्रीजी** म. का अंकलेश्वर में चातुर्मास है। वहां पर उन्होंने लिंबडी संप्रदाय के **अनिलाबाई महासतीजी** को ब्राह्मी लिपि सीखायी।

सान्निध्यं कुरुताद् ब्राह्मी देवता वरदायिनी।
सेवका यत्प्रसादेन साधयन्तीप्सितं फलम्॥
(अष्टलक्षी - उपा. समयसुंदर)

जिसकी कृपा से सेवक इष्ट फल प्राप्त करते हैं
वह वरदान देनेवाली ब्राह्मी देवी हमारा सान्निध्य करें।

प्रबंध संपादक
गौरव के. शाह (९८३३१३९८८३)

Printed Matter
Posted under clause 121 & 114 (7) of P & T Guide

To,

From : Shrutbhavan Research Centre,
(Initiation of Shrutdeep Research Foundation)
47/48, Achal Farm, Nr. Sachchai Mata Mandir, Ahead of Jain Agam Temple, Katraj, Pune-411046
Mo. 07744005728 Email : shrutbhavan@gmail.com Website : www.shrutbhavan.org

For Informative and Inspirational speeches about Shrut please subscribe our Shrutbhavan YouTube channel